Part I Hon.
PAPER I

प्रश्न कण्व और सातवाहन शासकों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
या
भारतीय इतिहास में शुंगों की भूमिका का विवरण दीजिए।
या

उत्तर —— मगध के अंतिम सम्राट बृहद्रथ का वध करके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने एक नवीन राजवंश की स्थापना की - १८४ ई० पू० जो इतिहास में शुंग-वंश कहलाता है। पाणिनि ने शुंगों को भारद्वाजवंश का कहा है और इस वंश का संस्थापक भारद्वाज ब्राह्मण था। बौद्ध साहित्य में भी वे ब्राह्मण कहे गये है। लामा तारानाथ ने भी पुष्यमित्र को अपने ग्रन्थ में ब्राह्मण राजा के नाम से व्यक्त किया है। इन सब प्रमाणों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शुंग वंश ब्राह्मण ही थे। पुष्यमित्र के नेतृत्व में ब्राह्मणों द्वारा मौर्यवंश का अन्त करने के लिए एक क्रांति की गयी और शुंगवंश की स्थापना इसी क्रांति का परिणाम थी।

पुष्यमित्र के शासन काल की मुख्य घटनाएं —— मौर्य की तरह पुष्यमित्र भी साम्राज्यवादी था वह चाहता था कि मौर्य साम्राज्य की तरह उसका भी विशाल और सुदृढ़ साम्राज्य कायम हो इसके लिए उसने कठोर यत्न किया। उसने मगध के आसपास के प्रदेशों पर पुनः अपनी सत्ता स्थापित की। (पुष्यमित्र के शासन काल में दो मुख्य घटनाएँ थी विदर्भ युद्ध और यूनानियों का दमन

(1) विदर्भ युद्ध —— विदर्भ का राज्य साम्राज्य की दूसरी राजधानी विदिशा की प्रान्तीय सीमा से मिला हुआ दक्षिण दिशा में स्थित एक संगठित राज्य था। उस राज्य का शासक (यज्ञसेन मौर्य साम्राज्य के अंतिम राजा बृहद्रथ का सम्बन्धी था बृहद्रथ के पतन के समय विदर्भ के शासक ने अपने कंधे से मगध की गुलामी का जुआ उतार फेंका

परन्तु, वह अपनी स्थिति सुदृढ़ नहीं कर पाया था। उधर पुष्यमित्र भी अपनी स्थिति सुदृढ़ करने में लगा था। अतः परिस्थिति को देखते हुए उसने उस समय चुप रहना ही उचित समझा किन्तु विदर्भ की स्वतंत्रता उसे सहा नहीं थी। कुछ समय बाद अपने पिता के संकेत पर विदिशा के शासक अग्निमित्र ने एक विशाल सेना लेकर विदर्भ पर आक्रमण कर दिया। शासक यज्ञसेन का चचेरा भाई कुमार माधवसेन अग्निमित्र का मित्र था। भीषण युद्ध के उपरान्त अग्निमित्र को विजय प्राप्त हुआ और उसने विदर्भ राज्य को दो भागों में बाँटकर एक भाग माधवसेन को और दूसरा यज्ञसेन को प्रदान किया। दोनों ही शासकों को पुष्यमित्र की अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार विदर्भ को दो भागों में विभक्त कर पुनः मगध के अधीन कर लिया था।

(3) यूनानी आक्रमण — भारत के उत्तर पश्चिमी प्रान्तों पर यूनानी आक्रमण पुष्यमित्र शुंग के शासक काल की दूसरी महत्वपूर्ण घटना थी। ये यूनानी साकेत और मथुरा होते हुए पाटलिपुत्र पहुँच गये थे। कालिदास के मालविकाग्निमित्र में इसका प्रमाण मिलता है। इन यवन आक्रमणकारियों को पहले कुछ सफलता तो प्राप्त हुई पर पुष्यमित्र और उसके पुत्र वसुमित्र ने उनका सामना किया और उन्हें परास्त भी किया। किस यवन नेता के नेतृत्व में आक्रमण हुआ था इस सम्बन्ध में इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ इतिहासकार डिमेट्रियस को और कुछ मिनाण्डर को यवनों का प्रमुख नेता मानते हैं। लेकिन विद्वानों के मतानुसार पुष्यमित्र और मिनाण्डर समकालीन नहीं थे, अतः अभी कोई बात कहना कठिन है।

मगध पर खारवेल का आक्रमण — यह अनुमान लगाया किया जाता है कि कलिंग के शासक खारवेल ने मगध पर दो आक्रमण किये थे और मगध नरेश को पराजित भी हुआ। लेकिन अनेकानेक विद्वान इस बात से सहमत नहीं है।

उनके मतानुसार पुष्यमित्र और खारवेल समकालीन थे। कुछ अन्य इतिहासकार यह समझते हैं कि शायद ही यह आक्रमण हुआ हो। लेकिन उनका कहना है कि मगध पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। यह भी कहा गया है कि खारवेल ने द्वितीय आक्रमण के बाद एक जैन संत की मूर्ति को भी मगध से कलिंग उठा ले गया।

अश्वमेध यज्ञ — पुष्यमित्र को अपने शासन काल में कई उपलब्धियां प्राप्त हुई थी। कई युद्धों में वह विजय भी हुआ था। इन युद्धों के उपलक्ष में उसने दो अश्वमेध यज्ञ किये। प्रथम यज्ञ उसने बृहद्रथ वध और अपने सिंहासनारूढ़ होने के बाद किया था दूसरा डिमिट्रियस नामक यवन को पराजित किए करने के बाद इन यज्ञों के द्वारा यह घोषणा की गयी कि शुंगों ने मौर्य साम्राज्य का नाश करके अपना राजवंश कायम कर लिया है और यवनों से भारत की रक्षा की है। साथ ही इन लोगों को यह भी मालूम हो गया कि ब्राह्मण धर्म फिर से जीवित हो उठा

पुष्यमित्र का शासन व्यवस्था — कठोर प्रयासों के उपरान्त पुष्यमित्र को एक विशाल साम्राज्य कायम करने में सफलता मिली। पंजाब में उसका साम्राज्य जालन्धर और स्यालकोट तक फैला हुआ था। दक्षिण में शुंग-राज्य की सीमा नर्मदा नदी तक थी। इसका समाज्य कई प्रान्तों में बंटा हुआ था जिनके शासक राजकुमार तथा राजपरिवार के व्यक्ति होते थे। शासन को सुचारु रूप से चलने के लिए एक सभा तथा मंत्रिपरिषद भी थी जो पुष्यमित्र को शासन कार्यों में सहायता दिया करती थी

पुष्यमित्र के उत्तराधिकारी — छत्तीस वर्ष तक शासन करने के उपरांत १४८ ई० पूर्व के लगभग पुष्यमित्र की मृत्यु हो गयी। उसके बाद उसका पुत्र अग्निमित्र राजा हुआ। आठ वर्षों के बाद उसका पुत्र वसुमित्र गद्दी पर आया। पुराणों के अनुसार शुंगवंश में कुछ दस राजा हुए

७२ ई० पूर्व के लगभग शुंगवंश के शासन का अंत हो गया अंतिम शुंग राजा देवभूति था। उसका मंत्री वसुदेव कण्व था उसने देवभूति का वध करा दिया और इस प्रकार शुंग वंश का अंत हुआ।

धर्म — शुंग काल में ब्राह्मण धर्म की उन्नति हुई। किन्तु इस युग का ब्राह्मण धर्म संकीर्ण नहीं था। बहुत से यूनानी इस काल में हिन्दू धर्म में प्रविष्ट हुए। यज्ञ कर्मकांड आदि पर विशेष जोर दिया जाता था। ईश्वर की भक्ति को अधिक महत्व दिया जाता था।

साहित्य की उन्नति — शुंग काल में संस्कृत साहित्य की भारी उन्नति हुई। पाणिनी की अष्टाध्यायी पर महाभाष्य लिखने वाले महर्षि पतंजलि इसी काल में विभूति थे। इस काल में रामायण और महाभारत का अंतिम रूप में संकलन किया गया। साहित्य के विभिन्न अंगों नाटक काव्य कथा कहानी और इतिहास का विकास तथा विभिन्न ग्रन्थों की रचना इसी काल में की गयी।

कला की उन्नति — शुंग काल में कला की भारी उन्नति हुई थी। इस काल की अनेक कलात्मक प्रवृत्तियां मिलती हैं जिनसे अनेक ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी होती है। अशोक के समय में इनका निर्माण ईंटों के आधार पर होता था। किन्तु शुंग काल में इनके पत्थरों का प्रयोग किया गया रेलिंग पर अनेक बौद्ध कथाएं अंकित की गयी हैं। स्तम्भों पर जातकों के नाम चित्र तथा दृश्य दिखाई पड़ते हैं। द्वार और चहार दीवारी पर भी जातक दृश्य मिलते हैं। स्तम्भों पर कुछ देवी देवताओं तथा पशुओं के भी चित्र मिलते हैं। हाथ जोड़े खड़ी हुई पशु एवं पक्षियों की मूर्तियां भी उल्लेखनीय हैं। भाजा के विहार, बोधगया की वेदिनी और बेसनगर के गरुड़ध्वज स्तम्भ, इस काल के कला के अच्छे नमूने हैं।